Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

January-2022, Volume : 08, Issue : 08, Annual Subscription Rs. 150/- Price per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

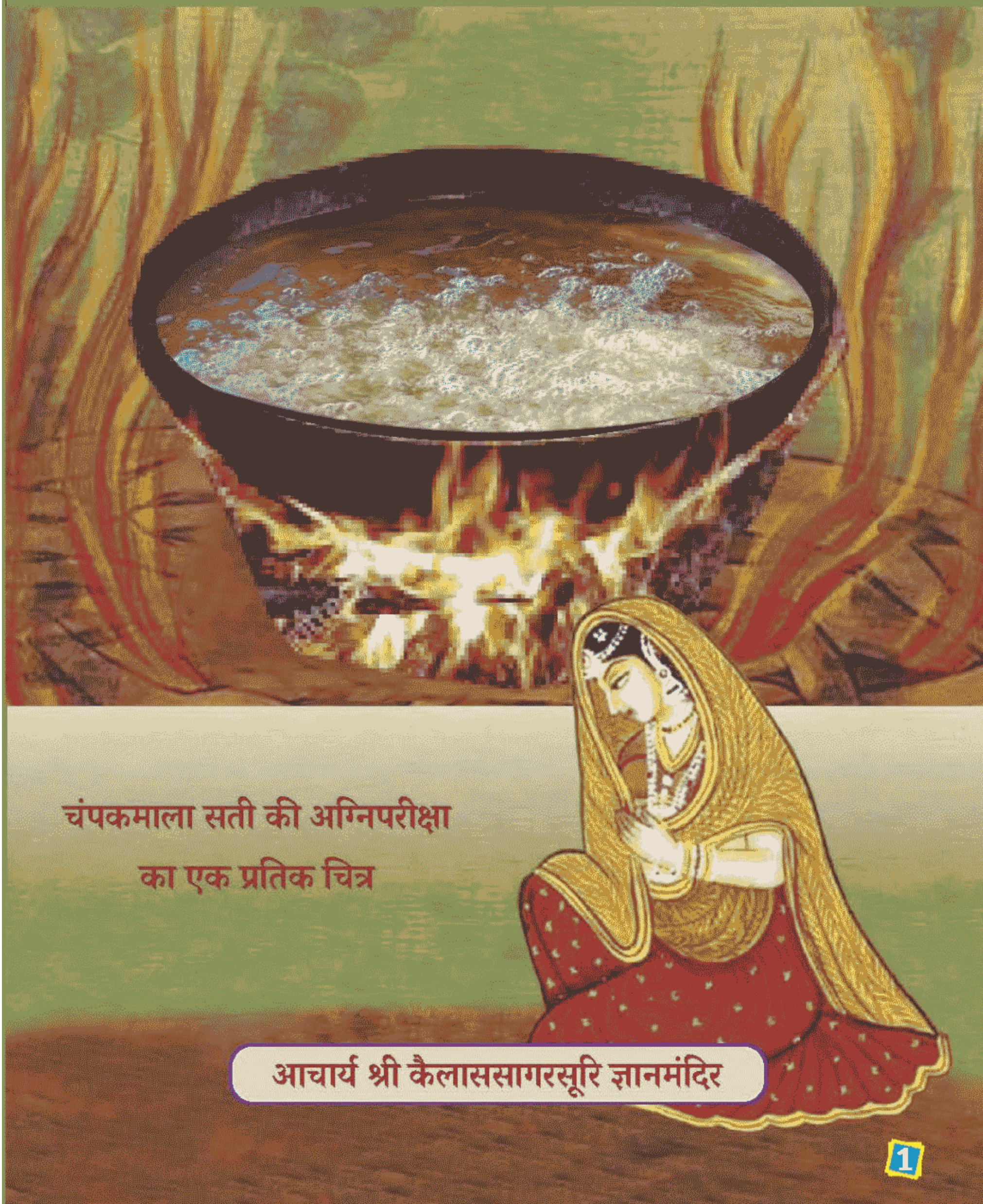

For Private and Personal Use Only

प. पू. राष्ट्रसंत गुरुदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के
घुटने का सफल ओपरेशन करने वाले अहमदाबाद शेल्बि हॉस्पीटल के
डॉ. विक्रमभाई शाह गुरुदेव के सान्निध्य में

पूज्य गुरुदेव के घुटने के ओपरेशन की शातापृच्छा हेतु
पधारे टोरेंट ग्रूप के चेरमेन एवं
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के प्रमुख श्री सुधीरभाई मेहता

राष्ट्रसंतश्री की शातापृच्छा हेतु पधारे
दादरानगर हवेली, दीवदमन, लक्षद्वीप के
प्रशासक श्री प्रफुल्लभाई पटेल

राष्ट्रसंतश्री की शातापृच्छा हेतु पधारे
भारत के अग्रणी उद्योगपति सुश्रावक
श्रेष्ठीवर्य श्री गौतमभाई अदाणी

राष्ट्रसंतश्री की शातापृच्छा हेतु पधारे
गुजरात राज्य के पूर्व गृह मंत्री श्री प्रदीपसिंह जाडेजा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-८, अंक-८, कुल अंक-९२, जनवरी-२०२२

Year-8, Issue-8, Total Issue-92, January-2022

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖	❖ सह संपादक ❖	❖ संपादन निर्देशक ❖
हिरेन किशोरभाई दोशी	राहुल आर. त्रिवेदी	गजेन्द्रभाई शाह

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ जनवरी, २०२२, वि. सं. २०७८, पौष शुक्ल त्रयोदशी

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	श्री गजेन्द्र शाह	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	७
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	८
४.	Awakening	AcharyaPadmasagarsuri	१०
५.	चंपकमालासती रास	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	१२
६.	एकीभाव स्तोत्र सह-नागचंद्रसूरिकृता छाया(टीका)	मुनि वंदनरुचिविजय	२४
७.	श्रीमद्यशोविजयजी जैन संस्कृत-पाठशाला-बनारस		२८
८.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमन्त कुमार	३१
९.	समाचार सार		३४

अठोतर्सो बुधडि, रावण तणे कपाल।
एके बुध न संपडि, लंका फिटण काल ॥२२॥

प्रत- १३५०४८

अनुवादः- कहा जाता है कि- अठहत्तर सौ बुद्धि रावण के दिमाग में थी, लेकिन लंका के विनाश काल में एक भी काम नहीं आई।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

गजेन्द्र शाह

प्रस्तुत अंक में १. गुरुवाणी, २. Awakening, ३. चंपकमालासती रास (अप्रगट रचना), ४. एकीभाव स्तोत्र सह टीका (अप्रगट टीका), ५. पुनर्प्रकाशन लेख, ६. पुस्तक समीक्षा, ये ६ लेख प्रकाशित किये जा रहे हैं। इनमें दो अप्रगट कृतियाँ प्रकाशित की जा रही हैं।

१. गुरुवाणी- मन के बदलते रहते भावों को देखकर चंचल मन को स्थिर करने के उपाय में योगनिष्ठश्री ने गुरुसंग, प्रभुभजन, सामायिक, स्वपरपदार्थों का ज्ञानचिंतन, किसी एक पदार्थ पर लक्ष्य रखकर स्थिर करना, आत्मा के अनेक गुणों में से किसी एक गुण पर केन्द्रित करना आदि मन को वश करने के उपाय मननीय है। मन को वश करने से संयम शक्ति की प्राप्ति व उससे ध्यान में प्रवेश, फिर समाधिपद की प्राप्ति तक का उपाय बताने की पूज्यश्री ने परम कृपा की है।

२. Awakening- आत्मानुशासन की महत्ता, ध्यान का प्रभाव एवं संग की शक्ति पर सुगम बोधक दृष्टांत के साथ प्रकाश डाला गया है। दृष्टांतों में ध्यान से कीडे में से मधुमक्खी बन जाना, धर्म में प्रमादी जीव का प्रमाद आग लगने पर भाग जाना, हवा की तरह धर्म की सर्वत्र उपयोगिता, संग से खरबूजे का रंग परिवर्तन, पारसमणि संग लोह का स्वर्ण में परिवर्तन, जलबिंदु कमल पर रत्न की भाँति, सीप में मोती, गर्म प्लेट पर भाँप में परिवर्तित होना आदि उदाहरण वाचक को तत्त्वबोध में विशेष प्रभावक है। यह प्रवचनांश राष्ट्रसंत प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. के पावन प्रवचन की पुस्तक Awakening से लिया है।

३. चंपकमालासतीरास- अज्ञातकर्तृक, पू.गणिवर्यश्रीसुयश-सुजशचंद्रविजयजी म.सा. द्वारा संपादित इस अप्रगट कृति में सतीत्व और सम्यक्त्व के प्रभाव को दर्शाया गया है। चंपकमाला के जीवन प्रसंग, व्यक्तित्व, ज्ञान और चारित्र वर्णन वाचक के लिये रोचक तो है ही साथ-साथ प्रेरक भी है। संपादकश्री ने वाचक की सुगमता हेतु कथा सुंदर ढंग से प्रस्तुत की है।

४. एकीभाव स्तोत्र सह टीका- वादिराज मुनि रचित एकीभाव स्तोत्र व उसके ऊपर नागचंद्रसूरि रचित (अप्रगट) टीका का संपादन मुनि श्री वंदनरुचिविजयजी म.सा. द्वारा किया गया है। यह लेख गतांक से क्रमशः प्रकाशित किया गया है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५. श्रीमद्यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला, बनारस- पुनः प्रकाशन स्तंभ अन्तर्गत यह लेख गतांक से क्रमशः प्रकाशित किया गया है । प्रस्तुत अंश में ज्ञान की महत्ता व पाठशाला हेतु पूज्य धर्मविजयजी द्वारा काशी में उठाये गये श्रम का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

६. पुस्तक समीक्षा- जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट तथा श्री रांदेर रोड जैन संघ द्वारा प्रकाशित, गणिवर्य श्री सुयशचंद्रविजयजी एवं मुनिवर्य श्री सुजसचंद्रविजयजी द्वारा संपादित, पुस्तक- 'जैसलमेर काव्य संग्रह' की समीक्षा प्रकाशित की गई है। इसमें विविध पूर्वाचार्यों, कविओं, साधु भगवंतों आदि द्वारा रचित संस्कृत व देशी भाषा की जैसलमेर व उसके आसपास के तीर्थों की रचनाओं को किस प्रकार प्रकाशित किया गया है, उसका वर्णन ज्ञानमंदिर के पंडित डॉ. हेमंतकुमारजी द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

उपरोक्त सामग्री से युक्त यह अंक शोधार्थीओं, आत्मार्थीओं व भाविक भक्तों के लिए मनभावन रहेगा इसी आशा के साथ...।

❊ ♦ ❊

क्या आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं ?

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा में आगम, प्रकीर्णक, औपदेशिक, आध्यात्मिक, प्रवचन, कथा, स्तवन-स्तुति संग्रह आदि विविध प्रकार के साहित्य प्राकृत, संस्कृत, मारुगुर्जर, गुजराती, राजस्थानी, पुरानी हिन्दी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में लिखित विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य पुस्तकों का अतिविशाल संग्रह है, जो हम ज्ञानभंडारों को भेंट में देते हैं। भेंट में देने योग्य पुस्तकों की सूची तैयार है। यदि आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं, तो यथाशीघ्र संपर्क करें। पहले आने वाले आवेदन को प्राथमिकता दी जाएगी।

ग्रंथपाल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- श्री आंबावाडी श्वे.मू.पू.जैन संघ, आंबावाडी, अमदावाद.
- जैन वीसा श्रीमाळी श्वे. टेम्पल, शीरपूर.
- शांतिकमल जैन संघ, चिंचपोकली, मुंबई.
- श्री अष्टमंगल जैन संघ, पुरुषवाक्कम, चेन्नई.
- श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी श्वे.मू.पू.वनअविगना पार्क जैन संघ.
- शाह मणीलाल लक्ष्मीचंद रीलीजीयस ट्रस्ट, माणेज गाम, ता. पेटलाद
- जैन श्वेताम्बर संघ ट्रस्ट, विजयनगर, अजमेर.
- श्री साणंद सागर गच्छ कमिटी, साणंद.
- श्री कल्याणकारी सिद्धार्थनगर श्वे.मू.पू.जैन संघ, गोरेगांव वे. मुंबई.
- शाह कर्माबेन पालन रीलीजीयस ट्रस्ट, बोरीवली, वे. मुंबई.

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

मनने वश करवाना उपाय

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि म.सा.

मु. वटादरा.

सुश्रावक भव्यात्मा................योग्य धर्मलाभ। आत्मिक सुख नित्य छे।

माटे भव्यात्मन् ! आत्मिक सुखनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो जोइए। सहजानन्द मेळववो एज श्रेष्ठ कर्त्तव्य छे। जगतमां बाह्यदृष्टिना योगे क्षणे क्षणे बुद्धि फरतां नवा नवा विचारोना तरंगो थया करे छे ए कंइ अनुभव बहार नथी। मनना विचारो एकसरखा न थाय तेनुं कारण ए छे के, आ जीवे मनने वश कर्युं नथी। मन घडीमां आकाशमां उडे छे, घडीमां बादशाहना एशआराम भोगवे छे, अने घडीमां गरीब जेवुं बनी जाय छे। घडीमां धर्मना विचारो करवा मांडे छे, तो घडीमां ते कोइ स्त्रीना विचारोमां घसडाय छे। घडीमां भाई सांभरे छे तो घडीमां रमवानी चीजो सांभरे छे। घडीमां रमवुं गमे छे तो घडीमां उंघवुं गमे छे, घडीमां धर्म श्रवण गमे छे तो घडीमां वातो करवी गमे छे। घडीमां मन ढीलुंढप थएलुं देखाय छे। घडीमां भजन गाय छे तो घडीमां वळी वातोना तडाका मारवा मंडी जाय छे। घडीमां जमे छे तो घडीमां ध्यान करे छे। आ प्रमाणे मननी अनेक पदार्थोनां संयोगे विचित्र गति थती देखवामां आवे छे। अहो ! ! ! आनुं शुं कारण ? क्यारे मन ठेकाणे आवशे, एकसरखो आनंद क्यारे मळशे, आम अनेक विचारो थया करे छे।

चंचळ मन क्यारे ठेकाणे आवे; मनने वश कर्या विना कंइ स्थिरता आवती नथी। मनने वश करवाना उत्तम चोक्कस उपायो जाणवामां आवे तो मन वश थइ शके छे। आवा उपायो लेवा माटे सद्गुरुनी सेवा करवी जोइए। सद्गुरुनां एकेक वचन उपर अत्यन्त विश्वास राखवो जोइए, अने तेमना उपदेशानुसार वर्त्तवुं जोइए। कुगुरुओना उपदेशमां भळवाथी बुद्धि बगडे छे। माटे एक सद्गुरुना विश्वास प्रमाणे प्रतिदिन आत्मोन्नति करवा प्रयत्न करवो जोइए। दुनियानी रीति न्यारी छे। मन वश करवानी रीति न्यारी छे। प्रारब्धयोगे दुनियामां रहेवानुं थाय तो पण अन्तरथी निर्लेप रही मन वश करवाना उपायो योजवा जोइए।

प्रतिदिन अर्ध कलाक तो अवश्य अमुक समये एक सगवडता वाळा स्थानके बेशी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भजन गावां जोइए। मंत्रना बळे जेम विंछीनुं झेर उतरे छे तेम प्रभु भजनना बळथी आखा दिवसमां मोहरूप झेर जे जे चढेलुं ते उतरी जाय छे। माटे आ हितशिक्षानो उपाय आ पत्र वांची अमलमां मूकशो। सदाकाळना माटे सामायिक करीने वा बीजी रीत्ये पण आ उपाय अमलमां मूकशो।

मनने वश करवा माटे अन्य उपाय ए छे के मनमां खराब विचार थवा देवो नहीं। मनमां थता खराब विचारोने अटकाववा। खूब जुस्साथी सारा विचारो करशो के तुर्त खराब विचारो अटकी जशे। कोइना सुंदर शब्दना रागमां तथा कोइना सुंदर रूपमां अने गंधमां मोहित थवुं नहि। मनमां एम समजवुं के पुद्गलनी-ए सर्व कारमी लीला क्षण विनाशी छे। एमां आत्मानो आनंद नथी। आ प्रमाणे हृदयमां सारा विचारो करशो तो मन सहेजे ठेकाणे आवशे।

मनने कोइ पण वस्तुमां लक्ष्य राखी स्थिर करवुं जोइए। एक आत्माना अनंत गुण छे तेमांथी गमे ते एक गुण लेइने तेना स्वरूपमां मनने तल्लीन करवुं। गुरुभक्तिमां मनने तल्लीन करवामां आवे तो विशेषतः तल्लीन थाय छे। मनमां रागद्वेषना विचारो प्रगट थतां वेंतज तेने दाबी देवाथी मननी समानता जाळवी शकाय छे। हालतां चालतां, खातां, पीतां अने कार्य करतां पण मननी समानता जाळवी राखवा प्रयत्न करवो।

मनने अमुक रीते वश करवाथी संयम शक्ति खीले छे, ध्यानमां प्रवेश थाय छे अने अंते समाधिपद प्राप्त थाय छे। व्यावहारिक जीवनकळाना अभ्यासो खीलवतां पण आवी आत्मिक जिंदगी गाळशो तो व्यावहारिक स्थितिनी पण उन्नति थशे। मनने एकाग्र करवानी टेवथी जे जे संकल्पो करशो ते ते संकल्पो सिद्ध थशे। तेम मनने केळववानी केळवणी लेशो तो उच्च जातिनुं मन बनशे, अने ते परम पुरूषार्थमां सहायी बनशे।

प्रिय भव्यात्मन् ! जाग्रत् थाओ, प्रमाद परिहरो। पोताना स्वरूपनी प्राप्ति माटे शिर साटे प्रयत्न करो, अलखनुं गान जगावो, मनने द्रढ बनावो। खरेखर आ प्रमाणे अभ्यास करशो तो अल्पकालमां आनंद जीवन प्रदेशमां प्रवेश करशो, अने आनंदमय बनी शकशो। तमारा संगीओने पण वीरप्रभुनी पेठे लाभ आपशो, तमारूं भविष्य सुधारवुं तमारा हाथमां छे। ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ७४४-७४५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

The small, undeveloped worm becomes a bee by continuous meditation. In the same manner, the soul by means of constant and continuous meditation on God or the Supreme soul becomes a supreme soul. On account of self-discipline life becomes sacred and venerable.

We know that our character is affected by our acquisition of qualities that provoke desires in us. But if our determination is strong, it will be easy to acquire self-discipline. Strength naturally emerges from detemination.

We have become so weak that we cannot even get up from our bed and walk about, for our own good but if fire appears in the house, we at once jump out of our bed and run out. How we get this strength, we cannot say. We may know that the same thing is true in respect of the attainment of self-discipline.

The summary of all this is that any man can become Satchidanand, if he has in him enthusiasm, devotion, politeness, a strong determination and self control. Thus comes the soul's release from ignorance, the mind's and the body's first spiritual change as a vast and resplendent knowledge pours down from above; the soul acquires God-knowledge as well as world-knowledge as its horizons widen and its immensities become immeasurable.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Good Company

There is no room specially meant for breathing in air so that we may go into it when we need air and stay in the other rooms when we do not need air. In the same manner, there is no fixed time or place for the performance of Dharma. Dharma is necessary in all the phases of life.

Ayimuntha Muni, Hemachandracharya, and various other great men attained self-discipline even in their childhood. Blessed are those that begin walking upon the path of brightness and enlightenment, even from the beginning. The task of carrying out Dharma is easy for them but those people are more blessed who obtain the light of self-discipline after having wandered about in the darkness of worldly desires and illusions because the task of acting according to dharma is difficut for them. They have to put forth greater efforts to drag their minds towards the path of salvation. They have to perform a more severe penance to attain this objective and they have also to be more careful.

To attain self-discipline, the company of (Samyamis or) disciplined people is essential. There is a proverb: "The water-melon changes its colour seeing the change of colour in the other water-melons". This is the effect of company; and it falls on all. On account of the touch of the Parasmani (the philosopher's stone) a piece of iron becomes gold. The drops of water shine like gems upon the petals of a lotus and when they fall in a shell, they become pearls. When the same drops fall on a hot plate they go up in the form of steam.

(Continue)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अज्ञातकर्तृक

चंपकमालासती रास

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

कथारस

जंबुद्वीपना भरतक्षेत्रमां विशाला नामनी नगरीमां ललितांग राजाने प्रीतिमती नामनी राणी हती। तेणीने पांच पुत्र उपर चंपकमाला नामनी पुत्री हती। एक दिवस राजा ललितांगनी राज्यसभामां कुणालापुरीना राजा अरिकेसरीना मंत्री अमरगुरुए आवी राजा पासे ऊंचा गढनी मांगणी करी। तेवामां राजपुत्री चंपकमाळा आवीने पिताना खोळामां बेठी। राजाए ज्यारे तेना अभ्यास अंगे पृच्छा करी त्यारे पंडितजीए तेना अध्ययननी प्रवीणता तथा विशेष ज्ञाननी वात करी राजाने प्रसन्न कर्या।

ते समये वात सांभळी रहेला अमरगुरुए राजपुत्रीने सुंदर रूपवाळी जोई पोताना राजवी अरिकेसरी साथे तेने परणाववानी ईच्छा थई। ते माटे तेणीना ज्ञान-कौशल्यने जाणवाना हेतुथी तेमणे-तेणीना लग्न कोनी साथे थशे? तेवो प्रश्न राजपुत्रीने कर्यो। राजपुत्रीए ते प्रश्नना उत्तरमां पोताना लग्न राजा अरिकेसरी साथे थशे तेवुं कह्युं, तथा कह्युं के १२ वरस पछी मात्र ६ मास माटे पति मारा परनी प्रीतिथी रहित थशे वळी त्यारपछी फरी प्रीतिवाळा थशे। तेमज आ वात साची छे तेनी निशानी रूपे-हमणा तमारा घरेथी सेवक आवी तमोने एक बाजु 'तमारो पुत्र परभवे सिधाव्यानी' तथा बीजी बाजु 'तमारी प्रियाए पुत्रनो प्रसव कर्यानी' विगत जणावशे तेवी विगत पण जणावी। हजु आ वात पूरी थाय ते पूर्वे मंत्रीना सेवके आवी तेमने चंपकमालाए कह्या मुजबना सर्वे समाचार आप्या। चंपकमालानी वातनी खातरी थता मंत्री तेणीना ज्ञानथी घणो प्रभावित थयो।

कुणालापुरीमां पाछा फरी मंत्रीए राजपुत्रीना रूपनी तथा ज्ञान-कौशल्यनी वात राजा अरिकेसरी पासे करी। राजा पोते पण ते वातथी विस्मित थई तेने मळवानी उत्कंठाथी राज्याधिकारीनो वेश धारण करी विशालानगरीमां पधार्या। बराबर ते ज समये पोताना सखी परिवार साथे परिवरेली चंपकमालाए राजाने ओळखी तेमना अहीं आववानुं कारण जणाव्युं। राजपुत्रीनी वात सांभळी तेणीना ज्ञानवैभवने निहाळी राजा अरिकेसरीए राजा ललितांग पासे चंपकमालानी मांगणी करी। राजा ललितांगे पण योग्य वर जाणी पुत्रीने राजा साथे परणाववानी हा कही। जो के लग्ननुं उत्तम मुहूर्त १

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्ष पछीनुं होवाथी लग्न त्यारे लेवाशे एम विचारी राजा ललितांगे पुत्री चंपकमालाने राजा अरिकेसरीनी साथे कुणालानगरीमां मोकली। राजाए त्यां नवो राजमहेल बनावी तेमां राजपुत्री चंपकमालाने राखी।

अहीं आवी चंपकमालाए राजा तथा मंत्रीने जैन धर्मनी ओळख करावी द्रढ सम्यक्त्वी बनाव्या। आम समय जतां वर्ष पूरुं थये चंपकमाला साथे लग्न करी राजाए तेणीने पोतानी पट्टराणी बनावी। हवे थोडो समय थये एक दिवस मंत्रीए- 'पोते ऊंट पर बेसी दक्षिण दिशामां जई रह्या होवानुं' स्वप्न जोयुं होवानी वात राणी चंपकमाला पासे करी। राणीए पोताना ज्ञानबळे मंत्री अमरगुरुने स्पप्नफळ अनुसार तेमनुं आयुष्य १० महिनानुं शेष होवानुं जणाव्युं। आ वात सांभळी उत्पन्न थयेला वैराग्यभाववाळा मंत्रीए ज्यारे साधु समागम (प्रव्रज्या ग्रहण करवा)नी ईच्छा दर्शावी त्यारे राणीए फरी ज्ञानवडे १५० योजनमां केवली भगवंत बिराज्या होवानी वात मंत्रीने करी। ते वात सांभळी खुश थयेला मंत्रीए आठ दिवसनो महोत्सव करी, सर्व लोकोने खमावी केवली भगवंत पासे जई संयम ग्रहण कर्युं। त्यारपछी काळक्रमे आसेवनादि शिक्षाने आराधता तेओ केवली थई शुक्लध्यानमां आरूढ थई निर्वाणने पाम्या। मुनिश्रीनुं निर्वाण थतां राजा-राणीए पण श्रावकपणुं स्वीकार्युं।

आ बाजु राजानो पट्टराणी प्रत्येनो वधु पडतो अनुराग जोई दुल्लहदेवी नामनी राणी क्रोधित थती चंपकमालाने ज तेनुं कारण मानती तेने पाडवाना विचारो करवा लागी। तेनी माटे एक दिवस तक जोई तेणीए सुलसा नामनी योगिनीने साधी राणी चंपकमाला पासे मोकली। चंपकमालाने पुत्रादि न होवाथी योगिनी सुलसाए ज्यारे तेने कालिकानुं स्मरण करवानुं तथा यज्ञादि करवानुं कह्युं त्यारे द्रढ सम्यक्त्वी चंपकमालाए तेम करवानी ना कहेता रोषे भरायेली योगिणीए चंपकमालाने हलका पाडवानुं नक्की कर्युं, तथा तेनी माटे व्यंतर देवीने आराधी चंपकमाला कुचारित्रवाळी होवानुं छळ राजाने देखाडवा कह्युं।

चंपकमालाने कुशीलवाळी चीतरवा देवीए अन्य पुरुष साथे क्रीडा करती चंपकमालानुं द्दश्य राजानी सामे प्रगट कर्युं। आ द्दश्य जोई अति दुःखी थया छतां राजा मनमां कुशीलवाळी तेवी राणीनुं शुं करवुं? ते अंगे विचारवा लाग्या। घणा मनोमंथनने अंते "जेनी पासेथी जैन धर्म अने सम्यक्त्व पाम्यो" तेवी राणीना उपकारने आगळ करी तेने (उपकारी गणी) क्षमा आपी दई राजाए तेनी साथेना व्यवहारने ओछो करी नांख्यो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजाना आ प्रमाणेना वर्तनथी ज्ञानबळे पोतानो पतिविरहकाळ आव्यो होवानुं विचारी, तेनी रमत राणी दुल्लहदेवी तथा सुलासए करी होवानुं जाण्या छता तेओने दोष न देतां राणी चंपकमाला धर्माराधनामां वधु तत्पर थई। आम करता ६ महिने तेवा प्रकारनुं कर्म पूरुं थतां धावमाताना आग्रहथी चंपकमालाए राजा पासे जई पोतानी शीलनी पवित्रता पूरवार करवा दिव्य करवानी ईच्छा दर्शावी। राजाए पण ते माटे नगरमां पडह वगडावी राणीना दिव्यनी उद्घोषणा करावी ।

दिव्यनी उद्घोषणा सांभळी महाजने ज्यारे राणीना शीलनी प्रशंसा करी त्यारे राजा अरिकेसरीए 'सोनानी परीक्षा तो कसोटीए ज थाय' एम कही राणीना दिव्यनी माटे तेलनी कडाही अग्निपर मूकावी। थोडीवारमां तेल ज्यारे उकळवां लाग्युं त्यारे चंपकमाला[ए हाथ?]ज्यां कडाहीमां मूक्यां त्यां तो क्रोधित थयेला देवोए आखा नगरने चारे बाजुथी सळगावी दीधुं। त्यां रहेला लोको आक्रंद करवा लाग्यां। लोकोनी आवी दशा जोई चंपकमालाए तुरंत देवोने उद्देशीने कह्युं के- "जो मारुं शीयळ निर्मळ होय तो कोई जीव मरो नहीं" राणीना आवा वचनोथी अग्निनो उपशम थता सौ कोई नगरजनो खुश थता सतीना पगमां पडी तेनी स्तवना करवा लाग्या। देव-देवीओ पण तेणीना शीलगुणनी प्रशंसा करवा लाग्या।

सतीना आ प्रभावने जोई योगिनी सुलसा पण पोताना अपराधनी क्षमा याचती चंपकमाला पासे आवी। तेणीने जोई क्रोधित थयेला राजाए ज्यारे तेणीने तेलथी बाळवानो आदेश राजसेवकोने आप्यो त्यारे सतीए तेने राजाना कोपथी छोडावी सम्यक् धर्म समजाव्यो। सुलसाए पण सती पासे सम्यक्त्व आदर्युं। बीजी बाजु पोतानुं पाखंड खुल्लु पडी जता राणी दुल्लहदेवी पण ज्यारे भयभीत थई आत्मघात करवा तत्पर थई त्यारे राणी चंपकमालाए तेणीने आत्मघातना अनर्थो समजावी प्रतिबोध आप्यो। तेणीए पण ते वात समजी, प्रतिबोध पामी सम्यक्त्व स्वीकार्युं। आम धर्माराधनामां अन्यने जोडनारी चंपकमालाने त्यारपछी २ पुत्र तथा १ पुत्रीनो परिवार थयो।

एक दिवस राजा पासे जई राणी चंपकमालाए पोतानी चारित्र ग्रहण करावानी ईच्छा प्रगट करी । ते वात सांभळी राजा पोते पण जेवामां संयम ग्रहण करवा तैयार थया तेवामां कोई केवली गुरुभगवंत विहार करतां ते नगरीमां पधार्या। केवलीभगवंतनो योग प्राप्त थता राजा, राणी, सुलसा तथा दुल्लहदेवी ए चारेय पुण्यात्माओए संयमनो स्वीकार करी तप, त्याग अध्ययनादि योगोने साधी (राजा गणधरपद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा राणी गुरुणी पद पामी) सर्व कर्मनो क्षय करी केवळज्ञान पामी सिद्धिगतिने पाम्यां।

कृतिकार तथा कृति परिचय

संपादित कृति कोई अज्ञान कविनी प्रायः १७मी शताब्दीनां रचायेली रास संज्ञक रचना छे। कृतिकारे अहीं मोटी कथाने खूब ओछा पद्योमां गुंथी होई रास वांचतां क्यांक-क्यांक रचनानुं अनुसंधान समजता थोडी वार लागे तेवुं छे परंतु आशा छे के कथासार परथी वाचको ते अनुसंधान समजी शकशे। कृतिकारनी प्रास गोठवण शैली, शब्दचयन विगेरे जोतां कृतिकार कोई अच्छा कवि होवानुं समजाय छे।

प्रस्तुत कृति चंपकमाला महासतीना शीलगुणनी साथे द्रढ सम्यक्त्वने उजागर करती लघुकृति छे। कृतिकारे अहीं कृतिमां चंपकमालाना बाल्यवयथी लई तेना अध्ययननी, ज्ञानवैभवनी, लग्ननी, तेना वडे कराती धर्माराधनानी, लग्न जीवनमां आवता कष्टनी, तेमांथी हेमखेम ऊतरी जवा तेना वडे कराता दिव्यनी तथा तेना उदार चारित्रनी वातो गुंथी लीधी छे। जो के आ सिवाय पण कृतिमां मंत्री अमरगुरुना तथा राजा अरिकेसरीना गुणोनी पण सुंदर वातो होई कृति खरेखर सुंदर छे। वळी कृतिना अंतमां आलेखायेली चंपकमाला विगेरेनी दिक्षा, केवळज्ञान तथा निर्वाणनी वातो पण तेमना गुणो प्रत्ये ध्यान केंद्रित करे छे। खास आ कथा वांची समजी वाचको ते-ते गुणो प्रत्ये अनुरागी बने ते ज मंगल प्रार्थना।

प्रत परिचय

प्रस्तुत वाचना डभोईना श्रीरंगविजयजी शास्त्रसंग्रहनी हस्तप्रत परथी तैयार कराएली वाचना छे। प्रतनुं लेखन अनुमानथी १७मी शताब्दीना पूर्वार्धनुं लागे छे। लेखन सुवाच्य तथा मध्यम छे। जो के लहियानी अणसमजने कारणे थोडा स्थानो जेवा के सुनेत्र-सुतेत्र, निवाणि = निर्वाणि, संति(त)ति = सतिति विगेरेमां अनुस्वार, मात्रा, अक्षरना सामान्य फेरफारने कारणे पण पाठ साव ज बदलाई जतो होई समजातो ज न हतो। आवा पाठो कोबा ज्ञानमंदिरनी प्रतमां जोतां स्पष्ट थई जता ते प्रतने संपूर्ण मेळवी प्रथम वाचनाने शुद्ध करी मळेल विशेष शुद्ध पाठ मूळ वाचनामां ज ( ) मूक्या छे। खास संपादनार्थे हस्तप्रतोनी नकल आपवा बदल डभोईना तथा कोबा-कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरना व्यवस्थापकश्रीनो खूब खूब आभार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चंपकमालासती रास

॥८०॥ नमीय निरंजन जिनवरू, गुरूआ **गोयमस्वामि**।
सतीयतणा गुण गाईइ, पातक[१] नासइ नामि ॥१॥

सतीय-सिरोमणि वंदीइ, **चंपकमाला** नारि।
समकित शील सोहावती, श्रीजिनधरम मझारि॥ (द्रुपद)

जंबूदीव सोहामणुं, रूअडलुं[२] भरत सुक्षेत्र।
पुरीय **विशाला** दीपती, राय **लल(लि?)तांग** सुते(ने)त्र[३] ॥२॥ सतीय...

प्रीतिमती राणीतणइ, ऊअरि[४] ऊपनी बाल।
पांच कुंअर ऊपरि सती, नामिइं चंपकमाल ॥३॥ सतीय...

जनम-महोछव अति भलउ, लीला करइ कुमारि।
राय सजन खोलइ रमइ, प्रमदानइ परिवारि ॥४॥ सतीय...

एक दिवसि राजनसभा, आविउ अवर प्रधान।
पभणइ राय **अरिकेसरी**, पूरव प्रेमनिधान ॥५॥ सतीय...

देसतणी सीमां अछइ, ऊंचउ गढ ऊदार।
आपु राय मया[५] करी, मागउ नरवर सार ॥६॥ सतीय...

ईणई य(ए) अवसरि खेलती, आवी सतीय सुजाण।
बइठी राय उछंगि[६] ते, धरती निरमल नाण ॥७॥ सतीय...

पंडित पासइं तेहतणउ, विद्यावंत विशेष।
तात पूछइ कुमरी कह्नइं, कला भणी किसी रेख[७] ॥८॥ सतीय...

लक्षण छंद कला सहू, नाटक ज्योतिष सार।
जैन नू(चू)डामणि जाणती, कुमरी ज्ञानभंडार ॥९॥ सतीय...

सकल कला पारीणता[८], पामी राजकुमारि।
उछंगि बइठी तुह्मतणइ, कहसिइ ध्यानविचारि ॥१०॥ सतीय...

वाणी पंडितनी सुणी, मूकी मनतणी लाज।
कला सवे कुमरी कहइ, हरखिउ हइंअडलइ[९] राजा(ज) ॥११॥ सतीय...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमरगुरू(रु) नामिइं नवुं, आविउ रायनइं पासि ।
ते मनि चिंतइ चमक्कीउ, कुमरी-गुण-उल्लासि ॥१२॥ सतीय...

मझ सामी[१०] अरिकेसरी, तेह भ(त)णी पट्टदेवि ।
ए कुमरी जउ पामीइ, काज सरंति सवेवि[११] ॥१३॥ सतीय...

राजन ज्ञानकला घणी, बेटीनइं बहू बुद्धि ।
कु(क)हु तुह्मनइं वर कुंण हुसिइ, केती संतिति[१२] सिद्धि ॥१४॥ सतीय...

वीवाहा(ह)दिन उछव कहुं, सुख दुख कहु सोभाग ।
वाणीय जाणीय भु(तु)[१३] भणइ, राजसुता करी राग ॥१५॥ सतीय...

पुरीय **कुणाला** राजीउ, अरिकेसरि वर जाणि ।
वरसिइं दीसिइं[१४] परणसि, सुणज्यो राणा राणि ॥१६॥ सतीय...

बार वरस बहु प्रीतिसिउं, विघटीय[१५] पछइ छम्मास ।
प्रीति विशेषिइं पोषसिइ, प्रथवीपति गुणवास ॥१७॥ सतीय...

एह वचन जाणु सही, ईणइं वली अहिनाणि[१६] ।
पुत्र तुह्मारु परभविउ[१७], पडीउ वावि निर्वा(वा)णि ॥१८॥ सतीय...

तिणी राति तुह्म प्रिया, प्रसवइ पुत्र विशाल ।
कहसिइ तुह्म घर-पायकू[१८], आवीय आंहां ततकाल ॥१९॥ सतीय...

एतलइ ते जण आवीउ, जाणी सघली वात ।
कुमरी ज्ञानकला सुणी, करइ प्रसंसा वा(ता)त ॥२०॥ सतीय...

अमरगुरु पाछा वल्या, हईडलइ[१९] हरख विषाद ।
पहुता उ नयरी आपणी, पेखइ ज्ञानसंवाद ॥२१॥ सतीय...

राजा आगलि वीनवइ, चंपकमाला कुमारि ।
रूप-रेख[२०] दीसइ नही, अवर सती को नारि ॥२२॥ सतीय...

ज्ञान-दिनेसर[२१] झलहलइ, टालइ सवि संदेह ।
नारिरतन रुलीयामणुं, वीनवीइ किसिउं तेह ॥२३॥ सतीय...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल-ऊंचेरी ॥

पछइ राजा परिकरइ[२२], लिइ थईयायत-वेस[२३]।
प्रधान पासइं[२४] सांचरइ, पांमिउ विशालदेस ॥२५॥*

प्रधान राय लेई करी, पहुता बहु परवारि।
श्रीललतांग रायनइं, मलीया सभा मझारि ॥२६॥

मिलीयसु[२५] तेवड-तेवडी[२६], कुमरी सहीयर साथ।
आवी राय जमलि[२७] रही, तु पूछइ नरनाह ॥२७॥

पाछा परहुत[२८] आवीया, कारण किसिउं विशेष।
ज्ञान प्रकासु[२९] निरमलुं, तुह्मनइं छइ बहु देष(ख?) ॥२८॥

मंत्रीश्वर आगलि करी, अरिकेसरीय नरिंद।
वेस धरी थईयातनु, पहुंता परतखि चंद ॥२९॥

तु राज रंगि(रीझि)इं मिलइ, अरिकेसरी ललतांग।
आरोगावी[३०] वीनवइ, आणी हईड[ल]इ रंग ॥३०॥

सामी तुह्मे मया करी, सेवक ऊपरि आज।
कृपा करी आदेशिवुं, मझ सरिखु कांई काज ॥३१॥

तु मंत्रीश्वर वीनवइ, नरवर नारिरतन्न।
मागि स्वामी अह्मतणउ, चंपकमाला धन्न ॥३२॥

तु राजा ततक्षण भणइ, एह अपूरव योग।
साकर दूध मेलावडु(ड)उ, ससवादु[३१] संयोग ॥३३॥

जोसीइ लगनकुंडालीउं[३२], वरसिइं दीशि(सि)इं वीवाह।
तां लगइं लगन न पांमीइ, दोषरहित नरनाह ॥३४॥

पछइ विमासी[३३] पाठवइ, कुमरी सरिसु[३४] प(ए) राय।
अरिकेसरि आनंदसिउं, हरिखिउ निज घरि जाइ ॥३५॥

भवन करावी अभिनवुं, आरोपइ सती सार।
दिवसि दिवसि राजा करइ, विद्या विवध विचार ॥३६॥

*अहीं गाथा क्रममां २४मुं (प्रायः आंकणीवाळु) पद्य लखवानुं रही गयुं होय तेवुं लागे छे जेने कारणे आंकणी समजाती नथी अथवा एवुं बने के आंकणी तो कृतिमां बधे ज रासनी प्रथम गाथा [सतीय...] वाळी होय फक्त गाथा २४ लखवानी रही गई होय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक दिवस आदर करी, मलीया मंत्री राय।
बहुतरि कला कलावती, पेखइ ए कुमरीय पाय ॥३७॥

पूछइ कला विशेषसिउं, कहु अपूरव मर्म।
तु कुमरी इम वीनवइ, किशि(सि)उं करउ तुह्मे धर्म ॥३८॥

महितइं[३५] युगति भणी घणी, सवि ऊथापइ[३६] तेह।
थापइ समकितरतन तु, सकल विचार छइ जेह ॥३९॥

राय मंत्रीश्वर आदरइं, सूधउ श्रीजिनधर्म।
दिन दिन शास्त्र विचारतां, त्रूटइ मोहि(ह)नी कर्म ॥४०॥

वरसमइ दिवसि वीवाहलु, करइ महोत्सव मेर[३७]।
परमाणंदिइं परणीइ, वाजइ मंगल-भेर ॥४१॥+

पटराणी पद आपीउं, वहिइं निरंतर प्रीति।
मंत्री सपन लहइ नसि[३८], पाछिलीइं निज चींति ॥४२॥

॥ ढाल-फागनी ॥

करहडा[३९] ऊपरि चडीउ, दिक्षण दिशि भणी जाइ।
जागिउ जाणइ कारण राणीय, पूछीय पायि ॥४३॥

मास आऊखुं दस कहइ, आविउ तु वयराग।
साधु-संयोग सलाघीइ[४०], जउ मिलइं गुरु नीराग ॥४२॥

भासइं चंपकमाला उ, केवलज्ञानी सूरि।
व्याहार[४१] करइं दिनकर जिस्या, दउढसउ जोयण दूरि ॥४३॥

जिनभवने उछव घणा, दीजइ दयालू(लु) दान।
बांद[४२] सवे छोडावीइं, साहामीनइं सनमान ॥४४॥

आठ दिवस उछव करी, सकल खमावीय लोक।
राय राणी मोकलावीय, चाल्यां धरी पर-लोक ॥४५॥

नगरि नगरि धन वेचतां, पहुता सदु(ह)गुरु पासि।
केवलज्ञानी गुरु कह्इ, संयम लिइं गुणरासि ॥४६॥

+ अहीं हस्तप्रतमां गाथा क्र. खोटो अपायो छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिख्या सेवीय बिहु परि, पामिउं केवलज्ञान।
अमरगुरु मुनि अणसरइं, सूधुं स(सु)कलध्यान ॥४७॥

चडीया उ चऊदमइ गुणपदि[४३], मुगति लहइ मुनिराय।
प्रणमीइ बे कर शिरि करी, तेह मुनीश्वर पाय ॥४८॥

राणीय राजाउ आदरइं, श्रावकनी सवि रीति।
दुल्लहदेवी मूलगी, रे(रो?)सु[४४] आणइ ए चींति ॥४९॥

मसवासिणि[४५] **स(सु?)लसा** मिली, कीधउं कपटसिउं मंत्र।
विद्या साधी व्यंतरी, जाणइ जडीय[४६] नइं जंत्र[४७] ॥५०॥

कूड करीनइं वीनवइं, चंपकमाला पासि।
दासीसिउं सलसा मिली, आवी सती आवासि ॥५१॥

पुत्र नही पट्टदेविनइं, मानु उ याग[४८] नइं भोग।
कालिकादेवी समरीइ, करशि(सि)इं सुख-संयोग ॥५२॥

वारइ सतीय विवे[क]सिउं, तु रीसाणी जाइ।
कलपी य कलंक अभिर(न)वुं, पाडिसु ए हउ पासि(यि)[४९] ॥५३॥

तु समरइ ते विंतरी[५०], माय करुं मझ काज।
चंपकमाल कुसीलणी, करीय भमाडउ[५१] राज ॥५४॥

कुजि(ज)श विस्तारउ एहनउ, पाडउ दुक्खभंडारि।
वचन न मानइ एह माहरुं, सलसा भणइ अपारि ॥५५॥

देवि देखाडइ रायनइं, रमतउ[५२] नर अतिरूप।
चंपकमाला सेजडी[५३], परतक्षि[५४], प्रगट सरूप ॥५६॥

व(वि)रिमिउ राजा चींतवइ, धिग धिग नारि कुसील।
धिग पडउ एणइ घरवासरडइ[५५], नारि न राखइं सील ॥५७॥

सापिणि कहुं के राखसी[५६], के वाघणि विकराल
मनि मइली माया करइ, कूड कपटनुं जाल ॥५८॥

बाहिरि सतीय प्रकासीइ, अंतरि असिउ[५७] विपाक।
ते भोजन किम भोजीइ, जे बोटइ[५८] नितु काक[५९] ॥५९॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को विद्याधर-वल्लहु[६०], एहनइं मिलिउ सुरंगि।
धिग पडउ तेहनइ जाणवइ[६१], जे राचइं स्त्रीरंगि ॥६०॥

सतीय-शिरोमणि ज्ञानमइ, जिनधर्मी करी जाणि।
अवर पुरुष जओ अणसरइ, पापतणी तु खाणि ॥६१॥

के करुं एहनइं अवकला(रा?)[६२], के मेहलुं[६३] शिर घाय[६४]।
विवध[६५] विमासण ते करइं, रीसइं चडिउ राय ॥६२॥

जिनधर्म जेहथी पामीउ, समकित जेहथी लाध[६६]।
राय विवेकी चिंतवइ, खमीइ तस अपराध ॥६३॥

भोग तिजइ[६७] नित नित मिलइ, मन पाखइ[६८] महीपाल।
तु[६९] राणी जाणइ सही, आविउ अंतर-काल ॥६४॥

जैन त्त(चू)डामणि समरीइ, जाणइ ए सघली वात।
दुल्लहदेवीवचनि ए, सलसा घाली घात ॥६५॥

एह करम आविउ उदयि, अवर न कहिनउ[७०] दोस।
धर्म विशेषिइं आदरइ, चित्ति नहीं लव रोस ॥६६॥

छ मसवाडा[७१] वुलीया, आविउ कर्मनुं अंत।
वडी धावि तु वीनवइ, राणीनइ एकांति ॥६७॥

देवि सणउ[७२] एक वातडी, मझ मनि असुख अपार।
रायतणउ आदर किसु, तुह्म ऊपरि न लगार ॥६८॥

लोक भणइ अपजि(ज)श घणउ, असतीनु अज्ञान।
विद्याधर विलसइ सदा, राणी रूपनिधान ॥६९॥

पछइ पटराणी कहइ, जाणुं सघली वात।
कालि करीसिइ ते परि, जिम जस हुसिइ विख्यात ॥७०॥

राय संध्या समइ आवीया, वीनवीउ वरतांत[७३]।
पर(पृ)थ्वीपतिसिउं परठीउं[७४], पतीज[७५] दिउ ग(म)झ कांत ॥७१॥

नयरमाहि तु विस्तरिउ, पडहा(हो) नवलउ नाद।
देवी दिव्य करावीइ, सुणिज्यो सज्जन साद ॥७२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिव्यतणइ थानकि मिलइ, महाजन पुण्यप्रधान।
जोवा सुरजण आवीआ, विद्याधर सुविमान ॥७३॥

राय प्रकासइ परिकरी, राणीनइं दिउ दिव्य।
महाजन बोलइ महासती, चंपकमाला भव्य ॥७४॥

लोकवचन गणीइ नही, मया करी नरनाह।
चंद्रकला जिम झलहलइ, साचउ शील-प्रवाह ॥७५॥

राय भणइ सांभलु(साचू) सहू, टालउ पुण अपवाद।
कनक कसुटइ परखीइ, महीधर[७६] करउ प्रसाद ॥७६॥

अगनि ऊपरि आरोपीउ, आडे फाले[७७] तेल।
पालखीइं पट्टदेवीय, पहुतां करतां गेल[७८] ॥७७॥

तेलमाहिं जव मूकीइं*, तुं कुपीया[७९] सुरवृंद।
घर मंदिर सहु परि(र)जलइ[८०], लोक करइं आक्रंद ॥७८॥

चंपकमाला पेखीय, भणइ सुणउ सुरलोय।
सील हुइ साचुं मझ, तु म बलउ जीव कोय ॥७९॥

वचन प्रकासइ जेतलइं, तेतलइं अपशमइं[८१] आगि।
सयल नयर सुख पामीउं, आवीय प्रणमइं पागि[८२] ॥८०॥

दुंदुभि वाजइं देवकी, जय जय करइं जन राय।
अमरी गयणंगणि रही, सतीयतणा गुण गाइ ॥८१॥

आवी ए सलसा वीनवइ, आपणउ सवि अपराध।
राय छंटावतु[८३] तेलइं, वारइ राणी[य] साधु ॥८२॥

समकित सलसा आदरइ, सेवइ सतीयना पाय।
महामहोछव करतां ए, मंदिरि पहुता राय ॥८३॥

दुल्लहदेवी भय करी, कंठि समोपइ[८४] पास।
चंपकमाला जाणीय, दोहिलूं वारइ तास ॥८४॥

प्रतिबोधी समकित धरइ, बहिन भणी बहु नेह।
ईणी परि धर्म करंती ए, निरमल कीधुं देह ॥८५॥

*अहीं राणी चंपकमालाए बळतां तेलमां (हाथ,पग?) शुं मूक्युं ते स्पष्ट थतुं नथी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्र-जनम दोइ अनुक्रमिं, बेटी जनमीय एक।
पछइ राय प्रति वीनवइ, संयम करउ विवेक ॥८६॥

केवली-गुरु-पायि योगिइं, लीधुं ए महाव्रत भार।
राणीय सलसा सरसीय, आचरइ चारित्र सार ॥८७॥

राय थ(हऊ)आ गणधरपदि, व्याहार करइं बहु देशि।
साधु(ध)वी-शिरि राणी हुई, तार[इ] ए गुरु उपदेसि ॥८८॥

तप संयम आराधीय, पामिउं केवलज्ञान।
दुल्लहदेवी महासती, पामइं सिवपुरस्थान ॥८९॥

राय राणी परवारसिउं, मुगतिइं पहुता साधु।
ते गुरुआ गुरु वांदीइ, सिद्ध हऊआ[८५] निराबाध ॥९०॥

धन धन ते नर जीभडी, जीविउं ते नर धन्न।
जे गुण गाइं साधुना, संचइ ए निरमल पुण्य ॥९१॥

शब्दकोश

१. पाप, २. रूडुं, ३. सारा नेत्रवाळो, ४. उदरमां, ५. कृपा, ६. खोळामां, ७. जातनी, प्रकारनी, ८. प्रवीणता, ९. हृदयमां, १०. स्वामी, ११. सर्व, १२. पुत्रादि, १३. ते, १४. दिवसे, १५. घटी, १६. निशानी, १७. मृत्यु पाम्यो, १८. घरनो सैनिक, १९. हृदयमां, २०. आकृति-सौंदर्य, २१. ज्ञानरूपी सूर्य, २२. परिवार साथे, २३. राज्याधिकारीना वेशे, २४. -नी बाजुमां, २५. मळी, २६. सरखेसरखी, २७. पासे, २८. राजा, २९. कहो, ३०. जमाडी, ३१. सारो स्वाद, ३२. लग्नकुंडली, ३३. विचारी, ३४. साथे, ३५. प्रधान, ३६. टाळे, ३७. श्रेष्ठ, ३८. रात्रीए, ३९. ऊंट, ४०. वखाणे, ४१. विहार, ४२. दास, ४३. गुणस्थानके, ४४. क्रोध, ४५. एक प्रकारनी तापसी, ४६. औषध, ४७. यंत्र, ४८. यज्ञ, ४९. बंधनमां, पगमां, ५०. व्यंतरी, ५१. भमाडुं, ५२. रतिक्रीडा करतो, ५३. सय्यामां, ५४. प्रत्यक्ष, ५५. गृहस्थावासमां, ५६. राक्षसी, ५७. आवो, ५८. अभडावे, ५९. कागडो, ६०. विद्याधर एवो प्रियतम, ६१. जाणपणामां, ६२. अपमानित, ६३. मूकुं, ६४. घात, ६५. विविध, ६६. पाम्यो, ६७. त्यजे, ६८. विना, ६९. तेथी, ७०. कोईने, ७१. महिना, ७२. सांभळो, ७३. वृत्तांत, ७४. आग्रह कर्यो, नक्कि कर्युं, ७५. विश्वास, ७६. राजा, ७७. (उकळतां तेलनुं)वधु जोरथी उछळवुं, ७८. आनंद, ७९. क्रोधित थया, ८०. बळे छे, ८१. शांत थाय, ८२. पग, ८३. नखावतुं, ८४. नाखे, आरोपे, ८५. थया.

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीवादिराजमुनिकृत

एकीभाव स्तोत्र सह* नागचंद्रसूरिकृता छाया(टीका)

मुनि वंदनरुचिविजय

(गतांक से आगे..)

[मूल] जन्माटव्यां कथमपि मया, देव ! दीर्घं भ्रमित्वा,
प्राप्तैवेयं तव नयकथा-स्फारपीयूषवापी ।
तस्या मध्ये हिमकरहिमव्यूहशीते नितान्तं,
निर्मग्नं मां न जहति कथं, दुःखदावोपतापाः ।।६।।

[छाया] भो **देव ! जन्माटव्यां**- संसारमहारण्ये **दीर्घं भ्रमित्वा**- चिरकालमावर्त्य **कथमपि**- महता कष्टेन **तव नयकथास्फारपीयूषवापी**- तवेयं स्याद्वादनयालङ्कृतदिव्यभाषामृतदीर्घिका मया लब्धा **हिमकरहिमव्यूहशीते- तस्या मध्ये** चन्द्रचन्द्रिकाप्रसरवदतिशीतले वापीमध्ये **निर्मग्नं मां दुःखदावोपतापाः** सहजशारीरमानसा-गन्तुकलक्षणदुःखगावार्चिप्रभावेन संचेतः सन्तापाः **कथं न जहति**- कथं न मुञ्चति अपि तु मुञ्चत्येव। अनारतमर्हत्परमागमाभ्यासनिरतस्य जन्मजरामरणादिरोगाः प्रणस्यतीत्यर्थः ॥६॥

पादन्यासादपि च पुनतो, यात्रया ते त्रिलोकीं,
हेमाभासो भवति सुरभिः, श्रीनिवासश्च पद्मः ।
सर्वाङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे,
श्रेयः किं तत्स्वयमहर्यन्न मामभ्युपैति ।।७।।

भो **भगवन् ! यात्रया त्रिलोकीं पुनतस्ते**-श्रीविहारातिशयेन जगत्त्रयं पवित्रीकुर्वतस्तव **पादन्यासादपि च**-श्रीपादनिक्षेपणादेव सन्निधानमात्रादेव **पद्मः** पुरस्तादेवोपक्षप्त- कमलविशेषो **हेमाभासः**- सुवर्णवर्णः **सुरभिः**- परमामोदयुक्तः **श्रीनिवासश्च**- लक्ष्मीनिलयश्च **भवति**। किल त्वयि **सर्वाङ्गेणाशेष मे मनः स्पृशति**- सति यत् श्रियो मामरहरनारतंनाभ्युपैति- अभिमुखं स्वयं नागच्छति। ततः **श्रेयः किमस्ति** अनेन यः पुमान् अन्तरङ्गेऽर्हद्रूपगुणवचनानि दधाति। तं पुण्यात्मानं भव्यजीवं नाश्रयत्युदयः कः सर्वोऽप्याश्रयतीत्युक्तं भवति ॥७॥

* गतांकमां पेज २२ पर संपादन पद्धतिमां मुद्रितना पाठांतर ना संकेत माटे M नी जग्याए अनवधान वश H छपाई गयुं छे, जे वाचको सुधारी वांचे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्तिपात्र्या पिबन्तं,
कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्दधाम प्रविष्टम् ।
त्वां दुर्वारस्मरमदहरं, त्वत्प्रसादैकभूमिं,
क्रूराकाराः कथमिव रुजा-कण्टका निर्लुठन्ति ॥८॥

भो देव ! **दुर्वारस्मरमदहरं**- निरङ्कुशकन्दर्प्पदर्प्पापहं **कर्मारण्यात्**- निर्गत्या**समानन्दधाम प्रविष्टं** असदृशानन्दसुखास्पदं मोक्षस्थानं प्राप्तं **त्वां** सम्यक्ज्ञानेन **पश्यन्तं** तथा त्वदीय**वचनममृतं**- त्वद्विषय**भक्तिपात्रेण पिबन्तं त्वत्प्रसादैकभूमिं**- तव प्रसन्नतामुख्यस्थानं **पुरुषं(षा?)नां- क्रूराकारा**स्तीक्ष्णमूर्तयः **रुजाकण्टका** रोगतीक्ष्णमुख-तीक्ष्णशलाका **कथमिव निर्लुठन्ति**- भिन्दन्ति। अनेन त्वां ध्यायतः त्वत्प्रणीत-परमागममभ्यस्यतः भवत्कारुण्योपजीविनः पुरुषस्य देहे अद्यापि न विशन्तीत्युक्तं भवति ॥८॥

पाषाणात्मा तदितरसमः, केवलं रत्नमूर्ति-
र्मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्नवर्गः ।
दृष्टिप्राप्तो हरति स कथं, मानरोगं नराणां,
प्रत्त्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्तिहेतुः ॥९॥

भो ! भगवन् ! **मानस्तम्भः पाषाणात्मा**- चेत् **तदितरसमः**- तदन्यग्रावसमः **केवलं रत्नमूर्ति**श्चेत् **तादृशो रत्नवर्गो**ऽन्यत्र रोहणादावपि वर्तते। तदन्यपाषाणरत्नवर्गयोरपि तादृश्याः शक्तेरभावात् **तच्छक्तिहेतु**र्मानस्तम्भशक्तिभूता **भवतः प्रत्यासत्ति**स्तव सन्निधान- सामर्थ्यात्मिका न स्यात् तर्हि **दृष्टिप्राप्तो मानस्तम्भः नराणां** पश्यतां भव्यानां **मानरोगं** द्वितीयकषायमहारोगं दर्शनमात्रेण कथं हरति? जिनेश्वरस्य सन्निधानसामर्थ्यमुपमातीतमित्यर्थः ॥९॥

हृद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्तिशैलोपवाही,
सद्यः पुंसां निरवधिरुजाधूलिबन्धं धुनोति ।
ध्यानाहूतो हृदयकमलं, यस्य तु त्वं प्रविष्ट-
स्तस्याऽशक्यः क इह भुवने, देव ! लोकोपकारः ॥१०॥

भो **देव ! भवन्मूर्तिशैलोपवाही** तव **मूर्ति**निकटवर्त्तिपवनः **हृद्यः प्राप्तो मरुदपि**- तव दिव्यमूर्तिपर्वततटनिकटवर्ती अचेतनात्मको मनोहरो मन्दानिलोऽपि **पुंसां निरवधि- रुजाधूलिबन्धं**- निस्सीमपापरजोबन्धं **सद्य**स्तत्क्षणादेव **धुनोति। ध्यानाहूतस्त्वं**- ध्यानाचलेनाऽऽमन्त्रितस्त्वं **तु यस्य हृदयकमलं प्रविष्ट** ! यस्य भव्यस्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्तमग्नं प्रविष्टवान् **तस्यासन्न**भव्यस्य इह- लोके **लोकोपकारः को** वाऽ**शक्यः** सर्वोऽपि शक्त इत्यर्थः।अर्हत्परमेश्वर-शरीरमात्रमाश्रिता अचेतनाप्यनेकसामर्थ्ययुक्ता किल तम् अर्हन्तं मनसा धारयतः पुरुषस्याऽशक्यं किमपि नास्तीत्यर्थः ॥१०॥

जानासि त्वं मम भवभवे, यच्च यादृक् च दुःखं,
जातं यस्य स्मरणमपि मे, शस्त्रवन्निष्पिनष्टि।
त्वं सर्वेशः सकृप इति च, त्वामुपेतोऽस्ति भक्त्या,
यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम् ॥११॥

भो **देव ! मम भवभवे यच्च यादृक् दुःखं जातं** तत्तादृक् सर्वं **जानासि** सर्वं ज्ञात्वा **यस्य** दुःखस्य **स्मरणमपि मे**- मम **शस्त्रवन्निष्पिनष्टि**- दुःखजातस्य स्मरणमपि न केवलसंपर्कः स्मृतिरपि शस्त्रवत् सहस्रधा चूर्णीकरोति हिंसायां जादिधातूनां प्रयोगे द्वितीया षष्ठी वा भवति। **त्वं सर्वेशः सकृपः इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या**- सुगममेतद् **यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव एव**-भवानेव प्रमाणम् अविसंवादीत्यर्थः। आश्रितानामासन्नभव्यानां जिन एव परमाप्त इति तात्पर्यम् ॥११॥

प्रापदैवं तव नुतिपदैर्जीवकेनोपदिष्टैः,
पापाचारी मरणसमये, सारमेयोऽपि सौख्यम्।
कः सन्देहो यदुपलभते, वासवश्रीप्रभुत्वम्,
जल्पञ्जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रम् ॥१२॥

भो जिनेश्वर ! **पापाचारी सारमेयोऽपि** अनाचारी रात्रिजागरोऽपि **रणसमये**- दुःषमावस्थायां **जीवकेनोपदिष्टै**स्तुवस्तुतिपदैरपराजितमन्त्रैर्दैवसौख्यं प्रापद् अवाप्सीत्।**त्वन्नमस्कारचक्रं**मन्त्रजपमालां**जाप्यैरमलैर्मणिभिः**स्फटिकादिर्जप्यचंचलः रुपस्थ पदस्थध्यानाधीनमानसस्सन् जपं कुर्वन्नेव **वासवश्रीप्रभुत्वम्**-सप्तपरम स्थानलक्ष्मीवल्लभत्व**मुपलभते इति** तत्र **कः सन्देहः** परोपदिष्टमन्त्रस्मरणमात्रेण सारमेयः सुगतिं प्राप्तवान् । किल मनोवाक्कायत्रिकरणशुद्ध्या जपाराधनं कुर्वन् पुरुषः सप्तपरमस्थानलक्ष्मीपदं लभत इति किमाश्चर्यम् ॥१२॥

शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते, सत्यपि त्वय्यतीवा,
भक्तिर्नो चेदनवधिसुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम्।
शक्योद्घाटं भवति[४] च कथं[५] मुक्तिकामस्य पुंसो,
मुक्तिद्वारं परिदृढमहामोहमुद्राकपाटम् ॥१३॥

४. हि. मु, ५. कथं. M,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भो देव ! **शुद्धे ज्ञाने** जीवादिपदार्था यथात्मज्ञाने **शुचिनि चरिते**- निरतिचारे चारित्रे च सत्यपि **अनवधिसुखावञ्चिका**- अनन्तसुखनिवासमोक्षकपाटोद्घाटनसमर्थाकुञ्चिकाऽर्गलमोचनसामग्री **त्वय्यतीवा** भवति। समुन्नता **भक्तिर्नो चेत्**- यदि न भवति तर्हि **मुक्तिकामस्य पुंसः परिदृढमहामोहमुद्राकपाटं मुक्तिद्वारं** दृढतरमोहनीयकीलबन्धमुद्रितमोक्षगृहद्वारं **शक्योद्घाटं** - उद्घाटनक्रिया शक्यं हि स्फुटं **कथं भवति** परमवीतरागचरणकमलयुगलजात निःक(ष्क)पटतः निश्चलभक्तिरेव मोक्षस्य कारणमित्यभिप्रायः ॥१३॥

प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्,
पन्था मुक्तेः स्थपुटितपदः, क्लेशगर्तैरगाधैः ।
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो, देव! तत्त्वावभासी,
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्भारती-रत्नदीपः ॥१४॥

भो **देव ! अयं मुक्तैः पन्थाः अघमयैरन्धकारैः समन्तात् प्रच्छन्नः खलु** स्फुटया व्रत **अगाधैर**तलस्पर्शैः दुःखस्वभ्रैः **स्थपुटितपदः** निम्नोन्नतत्वात् विषमप्रदेशः स्यात्। **तत्त्वावभासी** वस्तुयथात्मदर्शी **भवद्भारतीरत्नदीप**स्तव दिव्यताशा प्रतिहर तन्न प्रभादीपः **यद्यग्रेऽग्रे**- उत्तरोत्तरं पुरतो **न भवति**। तर्हि कः सुखतो व्रजति निरायसेन गच्छति मोक्षपदप्राप्तिकारणं भवद्रु(?) उपज्ञः परमश्रुतज्ञानोपयोग एव भवतीत्यभिप्रायः ॥१४॥

आत्मज्योतिर्निधिरनवधिर्द्रष्टुरानन्दहेतुः,
कर्मक्षोणीपटलपिहितो, योऽनवाप्यः परेषाम् ।
हस्ते कुर्वन्त्यनतिचिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः,
स्तोत्रैर्बन्धप्रकृतिपुरुषोद्दामधात्रीखनित्रैः ॥१५॥

भो देव ! **अनवधि**र्निस्सीमदृष्टि**रानन्दहेतुः** पश्यतः परमाह्लादकारी **कर्मक्षोणीपटलपिहितः** ज्ञानावरणकर्मकृतिता अभेद्यबन्धवरातलावगूढः **परेषां**-मिथ्यादृशा**मनवाप्यः** दुरापो **यः आत्मज्योतिर्निधिः** निश्चयेन येन शुद्धबुद्धैकस्वभावात्मनः केवलज्ञानलक्षणज्योतीस्वरूपमहानिधानमस्ति तं **भवद्भक्तिभाजः बद्धप्रकृतिपुरुषोद्दामधात्रीखनित्रैः** स्तोत्रैर्दृढतरकठिन-कुम्भिनीखननपटिस्थवश्रमयकुद्दालैस् तव स्वरूपगुणस्तवै-**रनतिचिरतः** शीघ्रेण **हस्ते कुर्वन्ति** स्वायत्ति कुर्वन्ति। अर्हदेव निर्भरभक्तिजनित- दिव्यस्तोत्रैः धृतिकर्माणि निर्मूलीकृत्यानन्तचतुष्टयस्वरूपं स्वात्मनि स्वेन स्वयं प्राप्तवानन्तरात्मा भवतीति तात्पर्यम् ॥१५॥

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमद्यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला-बनारस

(गतांक से आगे..)

इस आत्मा के शुद्ध करनेवाले तापके दो बराबर के दरजे हैं:-१ ज्ञान, २ क्रिया. इन दोनों के मिलाप से वह गर्मागरम महान भट्टी तय्यार होती है कि जिनके ताप में कर्मवत् इन्धन जलकर खाक हो जाता है और स्वच्छ आत्मा प्रगट हो जाती है। यद्यपि ज्ञान और क्रिया का जोडा रखा गया है तो भी प्रथम स्थान ज्ञान को दिया गया है और सम्पूर्ण ज्ञान की जिसको केवल ज्ञान कहते हैं उसके प्राप्त होने से ही जीवात्मा की मोक्ष होती है इस ज्ञान के पांच भेद है। महात्मा समयसुन्दरजी ने कहा हैः

"पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे ॥
पहेली ज्ञान ने पाछे क्रिया, नहीं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥१॥

नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥
मति श्रुत अवधि ने मनपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥२॥

मति अठावीश श्रुत चवदह बीश, अवधि छे असंख्य प्रकार रे ॥
दोय भेदे मन पर्यव दाख्यो, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥३॥

चन्द्र सूर्य नक्षत्र तारा, एकथी एक अपार रे ॥
केवल ज्ञान समो नहीं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥४॥

पारसनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उम्मेद रे ॥
समयसुन्दर कहे हूं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेद रे ॥ पंचमी० ॥५॥

इस वृत्तांत से ज्ञान की महिमा अच्छी तरह मालूम हो सकती है। ज्ञान और क्रिया का जोडा इस तरहपर बतलाया गया है कि जिस तरहपर राजा और मुसाहिब का एक दूसरे के मिलाप से जो कार्य होता है उसमें सिद्धि अवश्य होती है। सिर्फ ज्ञान ही ज्ञान के अभिमान में क्रिया को छोड बैठने से अपने इच्छित स्थानपर पहुंचना असंभव हो जाता है। इसही तरहपर सिर्फ क्रिया को ग्रहण करके ज्ञान को प्राप्त न करने से अन्धकूप के अन्धेरे में डावाडोल होना पडता है और अज्ञानता के साथ क्रिया करने का श्रम व्यर्थ होता है।

ज्ञान को चक्षुसहित पंगू मनुष्य की उपमा दी है। क्रिया को पैर सहित अन्धे की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपमा दी है। यह दोनों प्रकार के मनुष्य भिन्न भिन्न किसी इच्छित वस्तु को प्राप्त नहीं कर सकते है परन्तु दोनों का समागम होने से ज्ञान क्रियापर सवार होकर विचारा हुवा काम कर सकता है।

ज्ञान के प्राप्त होने से ही सच्ची और असली क्रिया का बोध हो सकता है। इसही कारण है महात्मावों ने परिश्रम उठाकर बल के अपने प्राणोंपर बाजी खेलकर जिस जगह उनको ज्ञान की प्राप्ति हो सकती थी वहां जाकर कष्ट सहन करके ज्ञान को प्राप्त किया है। हमारे सुप्रसिद्ध श्रीहरिभद्रसूरीजी के दो शिष्य हंस और परमहंसने व्याकरण, न्याय, अलंकार, काव्य, ... और जैन शास्त्रोंका पूरा अभ्यास करके बौद्ध धर्म का न्याययुक्त खंडन करने की आभि.... बौद्ध धर्म के ग्रंथों का अभ्यास करने के लिये गुरु महाराज की आज्ञा लेकर बौद्धों के मुल्क में गये और वहाँपर गुरु महाराज की आज्ञानुसार दोनों शिष्य वेषांतर करके रहे और बौद्ध धर्माचार्यो से उनके धर्म का ज्ञान प्राप्त किया और इस खबरदारी और हुशयारी के साथ रहे कि बौद्धों को अपने जैनि होने का हाल मालूम नहीं होने दिया। कालांतर में कई कारणों से बौद्ध धर्माचार्यो को खयाल हुवा कि यह दोनों विद्यार्थी जैनी हैं इसलिये उनकी परीक्षा करने के वास्ते धर्मशाला के नाल के पगतियापर जैन श्वेताम्बर प्रतिमा का चित्र लिखा। अन्य विद्यार्थी तो उस चित्र को उलांघकर चले गये परन्तु इन दोनों जैन मुनियों ने उस चित्रपर बुद्ध मुनि की तीन रेखा करके फिर उसको उलांघकर चले गये और यह विचार करके कि इस परिक्षा में किसी प्रकार का प्रपंच है वहाँ से अपने गुरुके वास्ते रवाना हो गये। इस खबर के मिलनेपर उस मुल्क के बौद्ध राजा की सेना उन दोनोंपर चढी और उनमें से एक हंस को तो रस्ते में ही मार डाला, दूसरा परमहंस बचकर चीतोड तक पहुंचा और अपने गुरु को अपनी प्राप्त की हुई पुस्तकें समर्पण करके खुद एक स्थानक में जाकर सो गया वहाँपर बौद्धों की सेना पहूचकर उसको भी मार डाला। श्रीहरिभद्रसूरिजी को यह बात मालूम होनेपर उन्होंने आकर्षक शक्ति से बौद्धों के सैनिकों को आकर्ष करके चूलेपर कढा चढाकर उनको होम डालने का प्रपंच किया यह बात उनके गुरू महाराज को मालूम होनेपर उन्होंने दो साधुओंको उनके पास भेजा वि(?) जिन्होंने गाथा बोलकर उपदेश किया कि जिससे श्रीहरिभद्रजी का क्रोध शम हो गया।

इस वृत्तांत से मालूम हो सकता है कि हमारे महान् पूर्वाचार्यों और मुनियों ने अपने प्राण नष्ट होने तक भी ज्ञान की प्राप्ति के वास्ते क्या क्या उद्यम किये हैं। कष्ट बल के महाकष्ट के साथ खुद ने ज्ञान की प्राप्ति करके हमारे वास्ते किस कदर अमूल्य विरासत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छोड़ी है हम उनके उपकार का अंश मात्र भी बदला नहीं दे सकते है। महात्मा हंस और परमहंस का शाही कष्ट सहन करके अपने परमपूज्य विख्यात महामहोपाध्याय न्यायविशारद वाचक श्रीयशोविजयजी ने वेषान्तर करके बनारसमें रहकर वहां के विद्वान् पंडितों से सम्पूर्ण ज्ञान हासल किया। और अपने अपूर्व ज्ञान बल के आठ बड़ी बड़ी सभायें जीतकर जैनका डंका बजाया। महा पंडित होने के कारण कई विद्वान् विप्रों ने इस महात्मा को अपनी अपनी कन्यावें अर्पण करने की प्रार्थना की परन्तु कामदेव के बाण से युद्ध करने में प्रबल होकर पौद्गलिक सुख की अभिलाषा न करके इस त्यागी वैरागी महात्मा नें इन सब बातों को छोडकर जैन धर्मको अच्छी तरह दिपाया।

समय के फेरफार से इन दिनों में जैन धर्म के शिक्षणका प्रबन्ध अक तौरपर न होने से अकसर मुनिराजों को पठन पाठन बहुत कष्ट सहनकर करना पड़ता था और फिर भी उनका श्रम साफल्य नहीं होता था। पंडितों को मूंह मांगी तनखुहा देनेपर भी जैन शैली के जानने वाले विद्वान् मुश्किल से मिलते थे। इस कमी को पूरा करने की गरज से मुनिश्री धर्मविजयजी ने विचार किया और अपने विचार को श्रावकोपर प्रगट करके एक कमिटी मुकर्रर की कि जिसके गंभीर विचार का सारांश यह आया कि जैन मुनियों तथा गृहस्थों की शिक्षा के वास्ते एक संस्कृत पाठशाला बनारस में अथवा जयपूर में खोली जावे क्योंकि पंडितों की संख्या और उनके विद्वत्ता के हिसाब से जयपुर छोटी काशी कहलाती है। परन्तु मुनिराजश्री धर्मविजयजीने काशी में एसी पाठशाला का होना इस कारण से मुनासिब समझा कि अवलतो काशी जैन क्षेत्र है यहांपर बहुत से कल्याणक हुवे हैं और श्री पार्श्व प्रभु की जन्मभूमी है और दूसरे काशी में इल्म के प्रचार से पंडितों की सहोबत से विद्या जल्दी हांसल हो सकती है। इसलिये उक्त मुनि महाराज ६ अन्य साधूओं को तथा १३ श्रावकों के लडकों को साथ लेकर गुजरात से मक्षीपार्श्वनाथ स्वामि की यात्रा करते हुवे काशी पहूंचे। इस तरफ कितनेक समय से मुनि विहार न होने से इन महात्मावों को रस्ते में बहूत कष्ट सहन करना पडा। परन्तु मुनिमंडल इस संसार में जन्मही कष्ट सहन करके आत्मा को स्वच्छ करने को लेते हैं इसलिये कुल तकलीफों को तकलीफें न समझकर बनारस पहूंचे। पूर्व देश में जैन मुनियों के वेष को कितनेक काल से न देखने से यहाँ के मनुष्यों को इन महात्मावों की क्रिया, बर्ताव, बेष को देखकर आश्चर्य मालूम हुवा और थोडे ही दिनों में इन महात्माओं ने अपने सदाचार द्वारा बनारस निवासियों पर अपने महत्वता की अच्छी छाप जमा दी।

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

लेखक - डॉ. हेमन्त कुमार

ग्रंथ का नाम : जैसलमेर काव्य संग्रह।

कर्ता : विविध पूर्वाचार्य।

संपादक : गणिवर्य श्री सुयशचंद्रविजयजी एवं मुनिवर्य श्री सुजसचंद्रविजयजी।

प्रकाशक : जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट तथा श्री रांदेर रोड जैन संघ।

आवृत्ति : प्रथम।

प्रकाशन वर्ष : विक्रम संवत् २०७७।

भाषा : संस्कृत एवं मारुगुर्जर।

विशेषता : जैसलमेर तीर्थ संबंधी विविध प्रभु स्तवनारूप कृतियों का संग्रह।

संशोधन-संपादन के क्षेत्र में आज पूज्य गणिवर्य श्री सुयशचंद्रविजयजी म. सा. एवं पूज्य मुनिवर्य श्री सुजसचंद्रविजयजी म. सा. अग्रपंक्ति में विराजमान हैं। इनके द्वारा संपादित व संशोधित अनेक कृतियाँ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। पूज्यश्री संस्कृत, प्राकृत एवं देशी भाषा के मर्मज्ञ तो हैं ही, साथ ही प्राचीन देवनागरी लिपि में भी अच्छी पकड़ रखते हैं।

पूज्यश्री प्रस्तुत ग्रंथ की भूमिका में लिखते हैं कि मैंने जब डॉ. पूरणचंद नाहर की पुस्तक “जैसलमेर लेख संग्रह” को देखा तथा उसमें साक्ष्यरूप संदर्भ हेतु दी गई कृतियों का अवलोकन किया तो मेरा मन चिंतन करने लगा कि क्या जैसलमेर संबंधित मात्र इतनी ही कृतियों की रचना हुई होगी ? क्या अन्य कवियों ने इस तीर्थ के माहात्म्य को उजागर करने हेतु स्तवनों आदि की रचनारूप प्रयास नहीं किया होगा ? यदि उनलोगों ने की भी होगी तो वे सभी कृतियाँ अभी कहाँ और कैसे मिलेंगी ? और इस प्रकार का चिन्तन करते हुए प्रस्तुत ग्रंथ के संकलन यात्रा का प्रारंभ किया। इस कार्य हेतु पूज्यश्री ने अनेक भंडारों, पूज्य महात्माओं तथा श्रावकों के साथ संपर्क करके हस्तप्रतों का संकलन किया और कार्य को गति प्रदान की। देखते ही देखते संस्कृत एवं मारुगुर्जर भाषामय २४४ कृतियों का संकलन एकत्र हो गया। इस संकलन में मात्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैसलमेर से संबंधित कृतियाँ ही नहीं है, अपितु लोद्रवपुर, अमरसागर एवं ब्रह्मसर तीर्थों से भी संबंधित कुछ कृतियों का समावेश है।

पूज्यश्री ने संकलित कृतियों का प्रथमतः संस्कृत एवं मारुगुर्जर इस प्रकार भाषा की दृष्टि से दो विभागों में विभक्त किया है, इसके पश्चात् सभी कृतियों को दो खंडों में विभक्त किया है, जिसमें प्रथम खंड में जैसलमेर तथा द्वितीय खंड में लोद्रवपुर आदि से संबंधित कृतियों को रखा है। प्रस्तुत संकलन की एक और विशेषता यह है कि कृतियों को रचना वर्ष के आधार पर प्राचीन कृतियों को ऊपर तथा अर्वाचीन कृतियों को क्रमशः नीचे की ओर रखा है। जिन कृतियों में रचना वर्ष का उल्लेख नहीं है, उनका कर्ता के उपलब्ध वर्ष के आधार पर वरीयता निर्धारित की है। इसी प्रकार अज्ञातकर्तृक कृतियों को अन्त में स्थान प्रदान किया है। इसके साथ ही पूज्यश्री ने प्रकाशित-अप्रकाशित कृतियों का भी विवरण प्रस्तुत किया है, जो संशोधकों-संपादकों हेतु अति उपयोगी है।

पूज्यश्री ने बहुत श्रमपूर्वक पाठशुद्धि की है तथा अनेक अशुद्धियों एवं पाठभेदों को चिन्हित करते हुए पाद टिप्पण में दिया है। विस्तृत भूमिका-प्रस्तावना में अनेक कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है, जिसके आधार से यह पता चलता है कि उन कृतियों में तत्कालीन नगर, नगर में स्थित जिनालयों, तीर्थयात्रा, विशिष्ट श्रेष्ठी-महानुभाव आदि का विस्तृत विवरण किया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि पूज्य महात्माओं ने प्रभु स्तवना के साथ-साथ ऐतिहासिक विषयों का भी भरपूर मात्रा में उल्लेख किया है, जो वर्तमान में ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। पूज्यश्री ने जहाँ-तहाँ संकलित-संग्रहित तथा लोकमानस की नजरों से दूर रही कृतियों को श्रमपूर्वक संकलन एवं पाठ संशोधन का जो कार्य किया है, वह पाठकों-श्रद्धालुओं को घर बैठे जैसलमेर की यात्रा करवाएगा तथा तीर्थ वन्दना के लाभ के रूप में आनन्दित करेगा।

प्रस्तुत प्रकाशन के आवरणपृष्ठ पर जैसलमेर के जिनालय का रंगीन चित्र प्रकाशित है, जो कृति के अनुकूल ही है। स्पष्ट एवं सामान्य से बड़े अक्षर, सुन्दर छपाई आदि के साथ परिशिष्ट में कठिन शब्दों के गुजराती अर्थ, कृति में प्रयुक्त रागों की सूची, कृति अकारादि क्रम में कर्तानाम आदि का विवरण उपलब्ध है। इसके कारण प्रस्तुत ग्रंथ वाचकों, संशोधकों आदि के लिए बहुत ही उपयोगी बन गया है। पूज्यश्री के द्वारा सम्पन्न यह कार्य समाज एवं विद्वानों के लिए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरदान स्वरूप है।

पूज्यवरों के सत्प्रयास के बारे में "खुदने खोई देवानी प्रक्रिया" शीर्षक अन्तर्गत आचार्य श्री तीर्थभद्रसूरि म.सा. के उद्गार पठनीय है। प्रस्तुत पुस्तक की प्रस्तावना अभयभाई दोशी ने लिखी है, जिन्होंने काव्यकुसुमों का अर्क वाचकों के सामने रख दिया है। प्रस्तावना पढने मात्र से संपूर्ण पुस्तक का रसास्वाद मिल जाता है।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा परिवार का यह सौभाग्य है कि पूज्य गणिवर्य श्री सुयशचंद्रविजयजी तथा पूज्य मुनिवर्य श्री सुजशचंद्रविजयजी ज्ञानमंदिर में संकलित ग्रंथों का सबसे ज्यादा उपयोग करने वाले महानुभावों में से एक हैं।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार उनके इस महान उपकारी कार्य की अनुमोदना करते हुए उनसे इसी प्रकार और साहित्य की अपेक्षा रखता है। आशा है पूज्यश्री भविष्य में इसी प्रकार उत्तम साहित्य का सृजन करते हुए संयमजीवन की उच्चता को प्राप्त करेंगे।

अन्त में पूज्यश्रीजी के इस कार्य की सादर अनुमोदना के साथ कोटिशः वंदन।

❊ ♦ ❊

(अनुसंधान पेज नं ३४ पर से)

गांधीनगर में निर्मित उद्यान का नामकरण राष्ट्रसंतश्री के नाम किया गया

आनंद वाटिका सोसायटी, सेक्टर-22, गांधीनगर में नवनिर्मित उद्यान का "राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी उद्यान" नामकरण किया गया। इस हेतु राष्ट्रसंतश्री एवं गांधीनगर जैन संघ का डिप्टी मेयर श्रीमान् प्रेमलसिंह गोल तथा उनकी समग्र टीम ने आभार व्यक्त किया।

इस समाचार की प्राप्ति के पश्चात् श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा के ट्रस्टीगण एवं समस्त कर्मचारीगण ने आनन्द की अनुभूति करते हुए गांधीनगर महानगरपालिका के सभी पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया है।

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचारसार

पूज्य राष्ट्रसंत के घुटने का सफल ऑपरेशन संपन्न व शातापृच्छा हेतु पधारे विशेष महानुभाव

दिनांक 18-12-2021 को परम कृपालु देव-गुरु की असीम कृपा से राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की डॉ. विक्रमभाई शाह द्वारा शेल्बी हॉस्पीटल, अहमदाबाद में Knee-Replacement surgery सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

ओपरेशन के बाद पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य की शातापृच्छा एवं आशीर्वाद ग्रहणार्थ विविध महानुभाव शेल्बी हॉस्पीटल में पधारे, उनमें दादरा-नगर हवेली और दमन दीव, लक्षद्वीप के प्रशासक श्री प्रफुल्लभाई पटेल, गुजरात राज्य के पूर्व गृहमंत्री माननीय श्री प्रदीपसिंह जाडेजा, भारत के अग्रणी उद्योगपति सुश्रावक श्रेष्ठीवर्य श्री गौतमभाई अदाणी, टोरेंट ग्रूप के सुश्रावक श्री सुधीरभाई मेहता, और अन्य भी अनेक महानुभावों ने दर्शन वंदन किया और पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हुए आशीर्वाद ग्रहण किये।

राष्ट्रसंतश्री के दर्शनार्थ पधारे गांधीनगर महानगरपालिका के डिप्टीमेयर

दिनांक 09/01/2022 के दिन गांधीनगर महानगरपालिका के डिप्टी मेयर श्रीमान् प्रेमलसिंह गोल एवं स्टैंडिंग कमिटी के चेयरमैन श्री जसवंतभाई पटेल आदि अपने अधिकारीओं के साथ राष्ट्रसंत प. पू. गुरुदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के दर्शन वन्दन एवं आशीर्वाद ग्रहण करने पधारे। उसके पश्चात् पधारे हुए माहानुभावों ने आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा के साहित्य संकलन, संरक्षण एवं वाचक सेवादि को देखा तथा यहाँ के संकलन एवं कार्यों से सभी बहुत प्रभावित हुए। यहाँ के संकलन एवं व्यवस्था को देखकर उनलोगों नें पुनः सपरिवार आकर विस्तृत जानकारी लेने हेतु जिज्ञासा प्रकट की।

(अनुसंधान पेज नं ३३ पर)

For Private and Personal Use Only

राष्ट्रसंत प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के दर्शनार्थ पधारे गांधीनगर महानगरपालिका के डेप्टी मेयर श्री प्रेमलसिंह गोल आदि अधिकारीगण

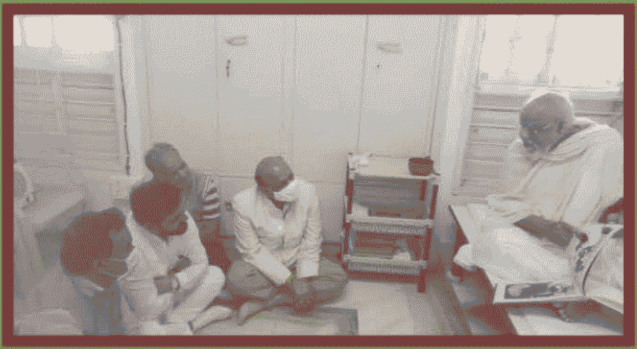

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का अवलोकन करते हुए डेप्युटी मेयर आदि अधिकारीगण

सम्राट संप्रति संग्रहालय का अवलोकन करते हुए

ज्ञानमंदिर मुलाकात अभिप्राय लेखन

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City So, and on 20th date
of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2024.

गांधीनगर सेक्टर-२२ (आनंदवाटिका सोसायटी) में नविनीकृत उद्यान का नामकरण राष्ट्रसंतश्री के नाम से किया गया.

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. And **Printed at :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and **Published at :** SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. **Editor :** HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only